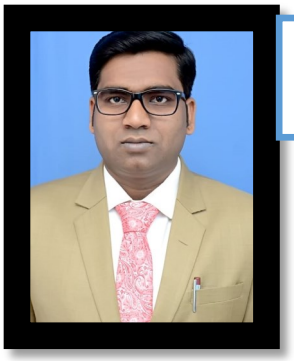

डॉ. मृत्युंजय कोईरी

राँची
झारखण्ड

नागरमोथा

खेतों में उगने वाले घासों में नागरमोथा सबसे जिद्दी है। इसका जड़ कंद बन जाता है। घास का एक भी कंद जिस खेत में आ गया। उस खेत में साल भर के अंदर पूरा फैल जाता है। फिर उसे उघाड़ना नामुमकिन है। नागरमोथा का कंद पेट में गैस से होने वाले दर्द पर दवा का काम करता है। इसके साथ बाऊ-अदरक को मिला देने से रामवाण बन जाता है। नागरमोथा और बाऊ-अदरक को अलाव से जलाने के बाद चक्की से पिसकर चूर्ण बना लिया जाता है। आदमी से लेकर गाय-बैल और बकरी तक के पेट में गैस होने पर गुड़ के साथ दो-तीन खुराक खिला देते ही पेट का दर्द छूमंत्र हो जाता है।

हरीश कुमार के पिताजी जैसे-तैसे अपना नाम लिख लेते। एक बार हरीश के पिता सभा में अपनी बात रखी। जिस पर गाँव के मालिक राजा साहब और अन्य गणमान्य लोग हँस पड़े। वहीं एक व्यक्ति ने कहा, "अरे! देखो! मूर्ख दल का आदमी आज विद्वान बनकर आया है। वह अपनी मूर्खता का परिचय दे रहा है। हहहह! ह! ह! ह! हहह! कर सब हँसने लगे।" वह विचारणीय व सकारात्मक बात कह रहे थे। पर पड़ोसी और हिस्सेधारों में कई पढ़े-लिखे न होने के कारण गाँव की किसी सभा में अपनी बात रखने का अधिकार नहीं। उनकी हँसी के बीच ही पिता ने मन-ही-मन प्रण कर लिया। "यदि मैं एक असली धरती पुत्र हूँ, तो मेरा पुत्र को इतना पढ़ाऊँगा! इतना पढ़ाऊँगा! कि गाँव का कोई व्यक्ति न पढ़ा हो!"

हरीश बचपन से पिताजी के साथ खेत में काम करता है। पाँच वर्ष के उम्र में गाँव के सरकारी स्कूल में एडमिशन करा दिया।

पिताजी पुत्र को खेती-बाड़ी के साथ-साथ पढ़ाई में भी मन लगाने का निर्देश देते हैं। हरीश का ध्यान पढ़ाई और खेती-बाड़ी दोनों में लगता था। स्कूल जाने से पहले और स्कूल से घर आने के बाद पिताजी का साथ देने खेत चला जाता है। दो-तीन खेतों में नागरमोथा बहुत ज्यादा था। हरीश कुदाल से खोद-खोद कर नागरमोथा का कंद को चुनता है। जब दूसरे दिन शेष जगह का नागरमोथा चुनने के लिए आया। तब देखा कि कल जिधर नागरमोथा का कंद को कुदाल से खोदकर हटाया था। उसी जगह नागरमोथा उग आया है। जिसका आधा कंद कट गया था या केवल घास। हरीश बाकी खेत का नागरमोथा हटाने के बजाय पुनः उगे नागरमोथा को कुदाल से खोद कर हटाने लगा। जब फिर अगले दिन आया है। तब भी देखता है कि उसी जगह पिछले दिन के बराबर उग आया है। वह जहाँ फेंका था। वहाँ पर भी उग आया है। हरीश क्रोध में आकर कुदाल से सब को खोद डाला। लेकिन पुनः उग आता है। पन्द्रह दिनों तक नारगमोथा को खोदता रहा। पर हर दिन उग आता है। हरीश एक दिन पड़ोस के दादाजी के साथ बकरी और गाय-बैल चराने चला जाता है। दादाजी से नागरमोथा का जिक्र करता है। दादाजी हँसते हुए कहा, "नागरमोथा! नागरमोथा! .....! वह कभी मरने वाला नहीं है! वह अमृत पीकर आया है। तुम उसे लाख खोद लो! या उसके कंद को उखाड़ फेंको! पर उसका छोटा सा कंद भी छूट जाये, तो पूरा खेत में पुनः फैल जाता है।"

"दादाजी पर उसे खत्म कैसे किया जा सकता है? मैं, कोशिश करके थक चुका हूँ! कोई उपाय है, तो आप बताने की कृपा करें।"

"हरीश देखो! मैं नागरमोथा से आधारित एक घटना बता देता हूँ। फिर तुम स्वयं ही उसका उपाय खोज लेना। एक किसान हर दिन पेड़ के नीचे बैठकर सुबह और दोपहर का खाना खाता। किसानिन पेड़ के आस-पास प्रति दिन झाड़ू करतीं। और गोबर से लिपतीं। किंतु एक नागरमोथा ठीक किसान के थाली के सामने उग आता। खाना खाते समय प्रतिदिन घास को तोड़ डालता। पर दूसरे दिन पुनः उगता। एक दिन क्रोध में आकर नागरमोथा के ऊपर ही थाली रख दी। पन्द्रह दिनों तक उसी थाली में खाना खाता रहा। सोलहवाँ दिन नागरमोथा थाली को छेद करके निकल जाता है।"

गाँव के प्राईमरी स्कूल से हरीश पाँचवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। गाँव से तीन किलोमीटर दूर मिडिल स्कूल जामुदाग में नामांकन कराया। बड़े घर के बच्चे साइकिल में स्कूल जाते। वे लंच में समोसा, पकौड़ा और रसगुल्ले आदि खाते। हरीश गाँव के गरीब किसान पुत्रों के साथ पैदल स्कूल जाता। और दोस्तों के साथ लंच के समय नलकूप में पानी पी लेता। स्कूल से घर आने के क्रम में हरीश और उनके सभी मित्र पचास-पचास पैसे की इलायची दाना खरीदते। तब पचास पैसे में सौ ग्राम इलायची दाना मिलती। रास्ते में चना की भाँति एक-एक दाना मुँह में डालते। ठीक बीच सुनसान जगह के आस-पास समाप्त हो जाती। सभी इलायची दाने के समाप्त होते ही दौड़ने लगते। सुनसान जगह में सात बहनी नामक भूत रहती हैं। वे दोपहर के समय ही निकलती हैं। बच्चा को खाना देने के बहाने ठगकर, अपनी शक्ति से जमीन के अंदर ले जातीं। सात बहनी बालक से शादी करने की जिद करती। यदि बालक या व्यक्ति सबसे छोटी से शादी करूँगा, कहा तो एक-दो दिन जीवित रह सकता है। क्योंकि सभी बड़ी बहनें दामादजी को छू नहीं सकतीं। और तब तक घर वाला किसी गुनी-ओझा को बुला लिया, तो वह अपने मंत्र की शक्ति से शायद बचा सकता है। यदि वह सबसे बड़ी बहन को शादी करने को तैयार हो गया। फिर बाकी छह बहनें जीजाजी-जीजाजी कहकर एक साथ गुदगुदाने लगतीं। गुदगुदाने की हँसी से वह बच्चा या व्यक्ति हँस-हँसकर मर जाता है। दोपहर के समय सब्जी छौंकने की आवाज सुनाई देती है। यह बात हरीश और उनके मित्र को भी पता है। इसीलिए, सब डर के मारे एक-ही दौड़ में उस स्थान से आगे निकल जाते हैं। प्रखंड के एक मात्र एस0एस0 हाईस्कूल सोनाहातू में नौवीं कक्षा में दाख़िला कराया। गाँव से हाईस्कूल की दूरी आठ किलोमीटर है। गर्मी का दिन था। हरीश और उनके साथी पहला दिन पैदल चला जाता है। घर लौटते-लौटते हरीश का पैर बहुत अधिक दर्द करने लगा। एक-दो मित्र के पैर में फफोला हो गया। सुबह हरीश का पैर फुल कर हाथी का पैर बन गया। तीन-चार दिनों तक आँगन में भी चलना-फिरना मुश्किल हो गया। हरीश के मित्र अपने पिता से धान बेचकर सेकेण्ड-हेण्ड साइकिल खरीदवा लिये। पैर ठीक होने पर हरीश अपने पिताजी का बाजार जाने वाली साइकिल लेकर चला जाता है।

और सभी मित्र अपनी-अपनी नई साइकिल में। हरीश बाजार के दिन अपने मित्र की साइकिल में चला जाता है।

मैट्रिक पास करते ही हरीश अनुमंडल के एकमात्र पी0पी0के0 कॉलेज बुण्डू के इंटरमीडिएट सेक्शन में दाखिला कराया। गाँव से कॉलेज की दूरी लगभग बीस किलोमीटर है। पिताजी सुबह मार्केट से करीब नौ-दस बजे आते। सब्जी नहीं बिकने पर कभी-कभी बारह भी बज जाता। तब पिताजी ने सबसे प्रिय बैल की जोड़ी को बेच दी। व्यापारी बैल ले जाने के लिए आ जाता है। हरीश और पिताजी बैल के सिंगों में तेल लगा रहे। उधर दोनों बैल के आँखों से आँसू निकलने लगे। फिर दोनों पिता-पुत्र हाथ में पैसा लेकर रोने लगे। जब व्यापरी दोनों बैल को एक ही रस्सी में बाँध कर ले जाने लगे। तब बैलों ने आर्शीवाद के रूप में अपना गोबर छोड़ गये। माँ टोकरी में गोबर को उठाती हुई रोने लगी। उस दिन दोपहर को कई खाना नहीं खाया। रात को दोपहर का खाना थोड़ा-थोड़ा खाकर सो गये। पिताजी अगले दिन हरीश के लिए सेकेण्ड-हेण्ड साइकिल सात सौ रुपये में खरीद दी। और बाकी पैसों से हाट जाकर एक जोड़ी बैल खरीद कर ले आये। दोनों बैल, पहले बैल की तरह ही दिखते हैं। एक किसान ने कहा, "हरीश के पिताजी तुम उन दोनों बैल को ही पुनः खरीद कर लाये हो क्या? दोनों का सिंग, पूँछ, पैर, गर्दन, रंग-ढंग और चाल-चलन में कोई पहचान नहीं सकता।"

हरीश प्रतिदिन घर से कॉलेज पढ़ाई करने चला जाता है। इंटर में प्रथम श्रेणी हासिल की। बीए0 में नामांकन पी0पी0के0 कॉजेल बुण्डू में ऑनर्स हिन्दी में कराया। सुबह खेत में पिता का साथ देने के बाद कॉलेज चला जाता। अपनी लगन और मेहनत से बीए0 में प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान प्राप्त की। हरीश राँची विश्वविद्यालय, राँची के हिन्दी विभाग में नामांकन कराया। माँ ने सोना का लॉकेट खरीदने के लिए कानाचूका में एक-एक रुपये करके रखी थी। वह आज कानाचूका को फोड़कर पाँच हजार रुपये निकाल दी। बाकी दो हजार और किताब-कॉफी खरीदने के लिए पन्द्रह सौ रुपये पिताजी ने धान बिककर दिये। तब जाकर राँची में रहने की व्यवस्था हो पायी। हर महीना हरीश पैसा लेने घर चला आता। पिताजी साइकिल से जामुदाग धान बिकने

चले जाते। और पैसा लाकर देते। जब हरीश एम0ए0 के द्वितीय वर्ष में था। तब बहुत बड़ा अकाल पड़ जाता है। एक भी खेत में धान की फ़सल नहीं हुई। पिताजी अपना सपना पूरा करने के वास्ते दस डिसमिल का खेत बेच दी। फिर भी हरीश की पढ़ाई में किसी प्रकार की अड़चन आने नहीं दी। हरीश भी पिताजी के परिश्रम व खेत को बेकार जाने नहीं दिया। एम0ए0 में अपनी मेहनत से प्रथम श्रेणी के साथ प्रथम स्थान प्राप्त की। विभाग में पहला स्थान प्राप्त करने पर एक वर्ष अध्यापन का कार्य मिलता है। पर हरीश को चार महीने तक अधिसूचना नहीं मिली। वह आर्थिक तंगी से गुजर रहा। प्राइवेट स्कूल में महीना चार हजार तनख़्वाह पर योगदान करने पर मजबूर हुआ। जहाँ सुबह सात बजे से शाम पाँच बजे तक रूकना पड़ता। प्रतिदिन चार-पाँच कक्षाएँ लेते-लेते मुँह और गाल दर्द करने लगता। किंतु उसके बाद भी घर जाने की अनुमति नहीं। बैठकर विद्यार्थी की कॉपी मूल्यांकन कराया जाता। हरीश पैसों के लिए मन और शरीर को जबरन रोके रखा। कभी भटकने नहीं दिया। पिता के परिश्रम और विश्वास पर खरा उतरना चाहता था। पीएच0डी0 करने के संदर्भ में दो दिन का अवकाश लिया। पहला दिन किसी प्रोफेसर से मुलाकात नहीं हुई। दूसरे दिन एक प्रोफेसर ने कहा, "आज मैं बहुत व्यस्त हूँ। तुम कल आकर मिलो!" हरीश प्रिंसिपल से और एक दिन का अवकाश देने के लिए फोन से आग्रह किया। प्रिंसिपल पूरी बात सुने बिना ही फोन रख दिये। हरीश पिता के सपना को साकार करने के वास्ते प्रोफेसर से मिलने चला जाता है। प्रोफेसर ने कहा, "मेरे पास अभी खाली नहीं है। यदि मेरे साथ ही करना है, तो कुछ दिन रूकना पड़ेगा। या जल्दी है तो अन्य प्रोफेसर से कर लो!" हरीश चौथे दिन स्कूल चला जाता है। अपनी क्लास में नये शिक्षक को पढ़ाता देख। वह सीधे प्रिंसिपल के कक्ष में जाकर पूछा, "सर मेरे वर्ग में कौन क्लास ले रहे हैं? उसे इससे पहले कभी नहीं देखा है। क्या? नये शिक्षक बुला लिये हैं।" प्रिंसिपल चुपचाप पैसा गिनने लगे। हरीश के हाथ में बीस दिन का बाकी पैसा हाथ में थमाते हुए केवल इतना ही कहा, "कल से मत आना! तुम अपना पीएच0डी0 का काम करो आराम से!" हरीश साॅरी सर! साॅरी सर! कह कर माफी मांगता रहा। पर प्रिंसिपल हाँ! से हूँ! तक नहीं बोले। हरीश के ज्यादा आग्रह करने पर गार्ड को आवाज दी, "सूरजा बाबू मेरे कमरे में कोई पागल

व्यक्ति चला आया है। इसे जल्दी बाहर निकालो! यह मेरा दिमाग खा रहा है।" "जी हजूर! जी हजूर! कहाँ है? किधर गया? मैंने किसी पागल को अंदर आने ही नहीं दिया है।" "यहाँ देखो! चेयर में चुम्बक सा लटका बैठा है।"

'सर! ये हिन्दी वाले शिक्षक हैं।" "ये! किसी विषय के शिक्षक नहीं हैं। यह एक पागल व्यक्ति है। कुछ देर पहले ही मुझे मारने पर उतारू हो गया था। तुम्हें आवाज देते ही डर से चुपचाप बैठा है। इसे पकड़कर बाहर निकाल दो! और इज्जत से नहीं निकलता है, तो घसीटते हुए गेट से बाहर निकाल दो! यह मेरा आदेश है।" सूरजा को हरीश के बाँह में पकड़कर गेट से बाहर निकालना अत्यंत दुख पहुँचा। सूरजा की आत्मा कह रही है कि आज मैं एक शिक्षक को ही नहीं। बल्कि स्वयं को भी इस स्कूल से बाहर निकाला है। हो-न-हो किसी दिन मुझे भी इसी तरह पागल-शराबी या भिखारी बनाकर, मेरे जैसे गार्ड को आदेश देकर स्कूल से बाहर निकाल दिये जाऊँगा। सूरजा शाम पाँच बजे स्कूल से छुट्टी होने के बाद घर जाने के लिए गेट के सामने खड़ा होकर ऑटो का इंतजार कर रहा। दस मिनट तक ऑटो नहीं आने पर सामने पेड़ के चारों ओर ईंट से घेर कर बनाया गया। उस चबूतरा पर बैठने के लिए जा रहा। दिन भर प्रिंसिपल के कमरे के बाहर खड़े होकर और अपने प्रिय शिक्षक को स्कूल से बाहर निकालने पर अधिक थका-हरा महसूस कर रहा है। चबूतरा के पास से किसी व्यक्ति की आह! आह! .....! की आवाज आ रही। सूरजा चबूतरा के पास चला जाता है। जहाँ हिन्दी के शिक्षक हरीश चबूतरा में लेटे बुखार से कराह रहे हैं। सूरजा ऑटो से सीधे हाॅस्पिटल लेकर चला गया। हॉस्पिटल में डॉक्टर साहब के द्वारा दवाई और सलाइन देने के दो घंटे बाद हरीश ने कहा "मैं कहा हूँ?" सूरजा उनके सामने आकर सारी बातें बता दी। हरीश की आँखों से आँसू निकलने लगे। वहीं आगे कहा, "आप आज मेरे लिए भगवान बनकर आये। अन्यथा मेरा बचना संभव नहीं था। भगवान! आपको और आपके परिवार को सुखी रखे। मैं, आपका जितना भी आभार प्रकट करूँ, कम पड़ेगा। आपका आभार प्रकट करने के लिए हिन्दी के शब्द कोश में कोई शब्द ही नहीं है।" हरीश पुनः रोने लगा। "सर! मैं एक गार्ड होने का केवल धर्म निभाया है। मैंने कोई बड़ा काम नहीं किया है। आज आपको स्कूल से निकाल दिया गया। कल मुझे भी निकाला जा सकता है। ये! तो प्राइवेट स्कूल

वालों का काम है। एक को निकालकर दूसरे को कम वेतन पर रखना। यही तो उनकी नीयत है। आपसे पहले भी कई शिक्षकों को निकाल दिये गये हैं। वेतन बढ़ाने की बारी आते ही छोटे-से-छोटे कारण पर निकाल देते हैं। आपका भी शायद अब एग्रीमेंट पेपर के अनुसार एक-दो महीने में वेतन बढ़ाने की होगी?" "जी! दो महीने के बाद ही आठ हजार करने की बात थी। पर आप कब से हैं?"

"मैं, पीछले चार साल से हूँ। लेकिन एक बार भी वेतन नहीं बढ़ा दिये हैं। मैं, मजबूरी में कर रहा हूँ। कहीं काम मिलते ही यहाँ से चला जाऊँगा। अच्छा! ठीक है, बातें होते रहेगी। मैं, डॉक्टर साहब से मिलकर आता हूँ। यदि दवा लिखकर डिस्चार्ज कर देंगे, तो रात में रूम जाकर थोड़ा आराम किया जा सकता है। सुबह पुनः स्कूल जाना है।"

"हाँ! हाँ! मैं, अब ठीक हो चुका हूँ। डॉक्टर से डिस्चार्ज करा लीजिए!"

सूरजा डॉक्टर से डिस्चार्ज कराके हरीश को रूम लेकर चला जाता है। वह भी रात भर हरीश के रूम में रूका। और सुबह उठकर सात बजे स्कूल चला गया। सूरजा के स्कूल जाने के बाद हरीश को चुपचाप बेड में लेटा देख। हरीश का रूममेट खाना खाने के लिए कहा। पर हरीश भूख नहीं है, कहकर इंकार कर दिया। रूममेट का बार-बार आग्रह करने पर थोड़ा-सा खाना खाकर सो जाता है। हरीश स्कूल से नहीं निकालने का आग्रह प्रिंसिपल से करता है। प्रिंसिपल ने कहा, "मैंने कल ही कह दिया था कि कल से स्कूल मत आना! तुम अपना पीएच0डी0 का ही काम करना आराम से! फिर आज आ गया।" हरीश क्रोधित होकर कहा, "मैं एक किसान का पुत्र हूँ। आज मैं, पुस्तक और कमल की सौगंध खाकर प्रण लेता हूँ कि अपने पिता के साथ खेती-बाड़ी ही करूँगा! पर प्राइवेट स्कूल में पढ़ाने नहीं जाऊँगा! खेती-बाड़ी करके एक ही वक्त खाऊँगा! पर कम-से-कम गर्व से जी पाऊँगा!" हरीश को नींद में बड़बड़ाते हुए देख, रूममेट हरीश को हिलाने-डुलाने लगा और कहा, "क्या? नींद में बड़बड़ा रहे हो! उठो....." हिलाने-डुलाने से हरीश की आँखें खुली। वह अपने बेड पर लेटा और सामने रूममेट को देख। आँखें मसल-मसल कर देखने लगा। फिर रूममेट से पूछा, "क्या? मैं, सपना देख रहा था।" "जी हैं! मैंने आपको जगाने की बहुत कोशिश की। पर आप न जाने क्या-क्या बड़बड़ा रहे थे?"

शाम चार बजे एक मित्र का फोन आता है। मित्र कहता है, "आज नेट का परिणाम जारी होने वाला है।" हरीश भी यूजीसी0 नेट के इम्तहान में बैठा था। दोनों मित्र यूजीसी0 नेट का परिणाम देखने स्मार्ट कैफे चले जाते हैं। हरीश के रिजल्ट में नेट क्वालिफ़ाइड फॉर असिस्टेंट प्रोफेसर लिखा। हरीश यूजीसी0 नेट पास की। अब वह सहायक प्रोफेसर बनने की योग्यता प्राप्त की। उनकी खुशी साफ झलक रही। तुरंत यह खुशखबरी घर में दी। वहीं उनके मित्र के फेल होने का दुख भी हुआ। हरीश के मन में पुनः एक बार आगे की पढ़ाई करने की इच्छा जागी। दूसरे ही दिन पीएच0 डी0 के शोध-निर्देशक के लिए विभाग और कॉलेज के प्रोफेसरों से मिलने लगा। छह महीने में एक मैडम ने हाँ की। और सिनोप्सिस तैयार करने का आदेश दी। साल भर में प्री-रजिस्ट्रेशन की संगोष्ठी सम्पन्न हुई। खेती करने में असमर्थ पिता से पैसा माँगने में संकोच कर रहा। हरीश नौकरी की तलाश में जुट गया। तीन-चार प्राइवेट विश्वविद्यालय में साक्षात्कार दी। साक्षात्कार में एक्सपर्ट से लेकर कुलपति तक तारिफ करते। सब एक महीना के अंदर फोन करके बुला लिये जायेंगे। वहीं आगे कहते, "आपका सौ प्रतिशत निश्चित है।" विकास विश्वविद्यालय के कुलपति ने स्वयं कहा, "आपका ओके है! केवल सर्टिफिकेट जाँच करा लो!" सात-आठ महीने तक कहीं से फोन नहीं आया। बाद में पता चला कि विकास विश्वविद्यालय के कुलपति ने हरीश की जगह पर अपने मित्र की गर्लफ्रेंड को रख ली। हरीश को कहीं नौकरी नहीं मिलने पर निराश होकर रूम खाली करके गाँव जाने की तैयारी में था। वहीं सुबह अखबार में देखा कि एक मॉइनोरिटी कॉलेज में हिन्दी के तीन सहायक प्रोफेसर की विज्ञापन छपी है। इससे पहले दो मॉइनोरिटी कॉलेजों में अप्लाई किया था। पर साक्षात्कार के लिए बुलाया नहीं गया था। फिर भी अप्लाई करके साक्षात्कार की तैयारी में जुटा। साक्षात्कार में एक्सपर्ट प्रश्नों का जवाब सुन बहुत खुश हुए। किंतु हिन्दी के अध्यक्ष डॉ0 ए0 के0 घोष ने जवाब पर असंतुष्ठी जाहिर नहीं कर पाने पर अंत में पर्सनालिटी पर प्रश्न उठाते हुए कहा, "प्रोफेसर का विषय ज्ञान के साथ-साथ पर्सनालिटी भी होना आवश्यक है। जिसे विद्यार्थी का मन लगा रहता है। और हरीश में कोई पर्सनालिटी नहीं है।" साक्षात्कार के परिणाम आने के बाद पता चला कि तीनों में से दो यूजीसी0 नेट क्वालिफ़ाइड हैं। डॉ0 ए0 के0 घोष दोनों के गाइड हैं। दोनों से तीन-तीन लाख करके

साक्षात्कार से पहले ही लिये थे। उनके पिता सरकारी ऑफिसर हैं। तीसरा कैंडिटेड डॉ0 घोष के साला की बेटी है। जो इस वर्ष एम0 ए0 पास की है। नेट0 का इम्तहान में दो बार फेल कर चुकी हैं।

केन्द्रीय विश्वविद्यालय में अनुबंध पर सहायक प्रोफेसर के चार पद की विज्ञापन अखबार में छपी। हरीश को जानकारी मिली कि केन्द्रीय विश्वविद्यालय में कोई सोर्स-सिफारिश और रिश्वत का खेल नहीं होता है। केवल कैंडिटेड की पात्रता और ज्ञान की जाँच-पड़ताल की जाती है। एक्सपर्ट आपकी रुचि और विशेष क्षेत्र से प्रश्न करते हैं। हरीश मन-ही-मन सोचा कि ऐसा होता है, तो फिर मेरा चयन निश्चय हो जायेगा! साक्षात्कार के दिन सुबह उठकर पूजा-पाठ करके चला जाता है। जहाँ चार पद के लिए लगभग डेढ़ सौ कैंडिटेड पहुँच चुके हैं। और अब भी आ रहे हैं। सबको एक कमरे में बैठाकर क्रम से बीस-बीस कैंडिटेड ले जा रहे हैं। जहाँ सब लाइन में खड़े किये जा रहे हैं। हरीश से पहले साक्षात्कार देने वाले सभी कैंडिडेट दो से पाँच मिनट के अंदर वापस लौट रहे हैं। हरीश साक्षात्कार देने के लिए कुर्सी पर बैठा। एक्सपर्ट ने केवल नाम पूछा और केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे अच्छा ठीक है! कह दिये। हरीश उठकर बाहर निकला और सीधे रूम की ओर चल पड़ा। सप्ताह दिन के बाद वेबसाइट पर परिणाम घोषित किया गया। जिसमें चार पांडे जी का चयन हुआ। हरीश के गाइड का पति केन्द्रीय विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के प्रोफेसर हैं। जो एक दिन बातों ही बातों में कहते हैं, ‘‘हिन्दी विभाग के नवनियुक्त चार सहायक प्रोफेसर में से दो डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे के क्लासमेट हैं। वह दोनों एम0ए0 में पचास प्रतिशत अंकों से पास किया है। बाकी दो में से एक पाण्डे जी का भतीजा है। वह दो बार में एम0ए0 पास किया है। सात बार यूजीसी0 नेट0 की परीक्षा में बैठ चुका है। चौथा डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे की पत्नी का चचेरा भाई है। वह केन्द्रीय विश्वविद्यालय में ही पाण्डे के साथ पिछले ही वर्ष पीएच0डी0 में प्री-रजिस्ट्रेशन कराया है। डॉ0 आर0 एस0 पाण्डे के क्लासमेट लम्बे समय से नौकरी का जुगाड़ कर रहा था। पर कहीं जुगाड़ नहीं कर पाया था। वे दोनों पाण्डे सर से कुछ दिन पहले से मिलने आ रहा था। शायद कुछ माल-पानी भी दिया होगा! क्योंकि पिछले कई दिनों से पाण्डे सर और कुलपति को साथ में लंच के समय बाहर जाते हुए

देख रहे हैं।" हरीश नौकरी की उम्मीद छोड़कर पीएच0 डी0 का शोध-प्रबंध भी लिखना बंद कर दिया। वह अब रुममेट के साथ रात की पार्टी में कैटरर के साथ काम करने जाने लगा। उसी बीच झारखण्ड के सभी विश्वविद्यालयों में घंटी आधारित सहायक प्रोफेसरों की विज्ञापन निकलती है। हरीश राजधानी के प्रसिद्ध राँची विश्वविद्यालय के अलावे अन्य विश्वविद्यालय में अप्लाई करता है। राँची विश्वविद्यालय में साक्षात्कार बहुत अच्छा गया। हरीश खुश था। फिर भी वह एक और विश्वविद्यालय में साक्षात्कार देने के वास्ते चला जाता है। वहाँ एक एक्सपर्ट ने विशेष क्षेत्र पूछा। और अन्य क्षेत्र से प्रश्न किया। हरीश के द्वारा विशेष क्षेत्र से प्रश्न पूछने का आग्रह करने पर उन्होंने कहा, "क्या आप केवल अपना विशेष क्षेत्र ही पढ़ायेगा या अन्य भी?" "पाठयक्रम में जो भी रहेगा। मैं, पढ़ा लूँगा!" "तो फिर .....!" हरीश एक-दो प्रश्न को छोड़ बाकी सभी प्रश्नों का जवाब दिया। राँची विश्वविद्यालय से केवल हिन्दी से सात कैंडिटेड का चयन हुआ। जिसमें तीन एसटी0, तीन एससी0 और एक बीसी वान का। जिस विश्वविद्यालय में एक-दो प्रश्नों का जवाब नहीं दे पाया था। उस विश्वविद्यालय में हरीश का मेरिट लिस्ट में पहला नम्बर मिला। किंतु पोस्टिंग सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के नये कॉलेज में। जहाँ न कॉलेज का पता, न ऑफिस और न कमरे का। विश्वविद्यालय के कर्मचारी से लेकर ऑफिसर तक को सही पता नहीं। बाद में उस क्षेत्र के एक चतुर्थ वर्गीय कर्मचारी से पता चला कि कॉलेज एक आवासीय विद्यालय के दो कमरे में संचालित है। शिक्षक और स्टाप पेड़ के नीचे बैठकर ऑफिस का काम निपटाते हैं। हरीश ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी को ज्ञान प्रदान करने के उद्देश्य से योगदान किया। दो कमरा होने के कारण हरीश बरसात के दिनों को छोड़ बाकी दिनों में पेड़ के नीचे बैठाकर क्लास लेता। विश्वविद्यालय के नियमानुसार एक दिन में चार क्लास लेनी है। पर हरीश प्रतिदिन चार से पाँच क्लास लेने लगा। विद्यार्थी गैस पेपर के भरोसे पास कर रहे थे। सेमेस्टर फोर-सिक्स के विद्यार्थियों को पाठयक्रम के पुस्तकों का नाम भी पता नहीं था। प्रिंसिपल पहले पन्द्रह दिनों का पारिश्रमिक बिल नहीं भेज देते हैं। प्रिंसिपल का कहना है, "आप रुटीन तैयार नहीं किया है।

और पाँच तारीख के बाद विश्वविद्यालय के पास बिल भेजने पर विश्वविद्यालय बिल को डस्टबीन में डाल देती है। केवल पन्द्रह दिनों की तो बात है! इसको छोड़ दीजिए! अब इस महीना के लिए मास्ट्रर रुटीन में क्लास दर्ज कराके अलग से अपना विभाग का रुटीन तैयार कीजिए! मैं, मास्ट्रर रुटीन के अनुसार ही बिल पास करुँगा!" हरीश पन्द्रह दिनों का पैसा छोड़कर प्रिंसिपल के निर्देशानुसार ही रुटीन तैयार करता है। मास्ट्रर रुटीन के अनुसार एक दिन में एक या दो ही क्लास दिखा सकता है। भले वह एक दिन में चार या पाँच क्लास लेता हो! विद्यार्थी का फॉर्म सत्यापित करना, मध्यसत्रीय परीक्षा और अन्य काम भी करना पड़ता। महीना में दस से पन्द्रह हजार का बिल पास होता। ग्रीष्मावकाश, होली, दुर्गा पूजा और अन्य अवकाश पर एक भी रुपया नहीं मिलता। उस समय रुम का भाड़ा और खाना-पीना के वास्ते तरसना पड़ता है। दस से पन्द्रह हजार का पारिश्रमिक भी हर महीना नहीं मिलता। कभी तीन माह, तो कभी छह माह या कभी-कभी एक साल या डेढ़ साल के बाद। काम स्थायी प्रोफेसर से ज्यादा कराया जाता है। पर पैसा देने के समय घंटी गिन-गिन कर। हरीश अपना अनुभव और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी के ज्ञानवर्द्धन के लिए रुका था। एक दिन वह अपने पीएच0 डी0 के काम पर राँची विश्वविद्यालय पूछताछ और एक मॉइनोरिटी कॉलेज में साक्षात्कार देने के वास्ते राँची जाना है। प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के पास तीन दिन अवकाश के लिए आवेदन लेकर जाता है। प्रिंसिपल केवल साक्षात्कार के दिन का अवकाश पास करते हुए अगले दिन सुबह दस बजे कॉलेज में उपस्थित होने का निर्देश दिये। हरीश रात को करीब बारह बजे राँची पहुँचा। सुबह नौ बजे साक्षात्कार देने निकला। साक्षात्कार में बेतुका प्रश्न पूछे गये। वह दूसरे दिन, भोर करीब चार बजे की पहली बस के लिए निकल पड़ा। पर पहली बस खराब होने के कारण दूसरी बस में जाना पड़ा। कॉलेज ढाई बजे पहुँचता है। संयोग से प्रिंसिपल नहीं आये थे। तब से हरीश का मन कॉलेज से टूट गया। और दुखी रहने लगा।

अचानक एक दिन घर से फोन आया। माँ की तबीयत बहुत खराब है। हरीश एकलौता पुत्र है। पिता भी वृद्ध हो चले हैं। अस्पताल में पत्नी की देखभाल कर पाना असंभव है। हरीश क्लास से निकलकर प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के नाम एक आवेदन लिखा।

"मेरी पूज्यनीय माताजी की तबीयत बहुत खराब है। वे अस्पताल में एडमिट हैं। मेरे पिताजी भी वृद्ध हो चुके हैं। माताजी को मेरा अत्यंत आवश्यकता है। मुझे तत्काल जाना पड़ेगा.....।" प्रिंसिपल केवल दो दिन का अवकाश पास करते हैं। प्रिंसिपल डॉ0 के0 के0 राम के इस निर्णय पर हरीश क्रोधित होकर एक सफेद पन्ना में इस्तीफा पत्र लिखकर थमा दिया। और गिड़गिड़ाते हुए कहा, "मैं जीवन भर घंटी आधरित सहायक प्रोफेसर की नौकरी नहीं करूँगा! इससे अच्छा मजदूरी है। गाँव में सुबह काम पर जाओ! शाम को घर लौटते समय पैसा लेकर आ जाओ!"

माताजी ठीक हो गयीं। हरीश माताजी को घर लेकर आ गया। दूसरे दिन कुदाल लेकर खेत जा रहा, तब पिताजी ने कहा, "बेटा! कॉलेज नहीं जाना है। कॉलेज से कब तब की छुट्टी लेकर आये हो?"

"मुझे कॉलेज नहीं जाना है!"

"क्यों?"

"क्यों क्या? मुझे नहीं जाना है बस!" कहता रोने लगा।

"बेटा! वहाँ क्या हुआ? रोता क्यों है?" कहता पिताजी भी रोने लगे।

"पिताजी! मैं, कॉलेज से इस्तीफा देकर आ गया हूँ। प्रिंसिपल केवल दो दिन की छुट्टी दे रहे थे। आप ही बताये, मैं क्या करता?"

"अच्छा ठीक है! तुम चिंता मत करना! एक दिन तुम्हें अच्छे कॉलेज में सरकारी नौकरी मिलेगी!"

हरीश हर दिन खेत में काम करने लगा। खेत में उगे नागरमोथा के कंद को खोद-खोद कर निकाल रहा। कुछ का कंद छूट जाता। सुबह उस कंद से नागरमोथा का छोटा-सा पत्ता आकाश की ओस में भिंगा आसमान की ओर ताक रहा। हरीश यह देख सोच में पड़ गया, "एक घास को मैं, प्रतिदिन काट देता हूँ। पर उसे समाप्त नहीं कर पाता। वहीं बचपन में दादाजी की सुनाई कथा स्मरण हो आता है। जिसमें नागरमोथा किसान की थाली .....। हो-न-हो मैं भी एक नागरमोथा की भाँति ही संघर्ष को जारी रखूँ! यदि नागरमोथा थाली को छेद करके निकल सकता है तो मैं क्यों नहीं? किसी-न-किसी दिन ईमानदार एक्सपर्ट से मुलाकत होगी!"

हरीश पुनः खेती-बाड़ी के साथ शोध-प्रबंध का काम करने लगा। पीएच0 डी0 की डिग्री भी मिल गई। उधर सरकार ने एक उच्चस्तरीय कमेटी की गठन की। और राज्य के कैंडिटेड को पहली प्रथामिकता देते हुए विज्ञापन जारी की। साक्षात्कार का लाइव सीधे मुख्यमंत्री के पास। साक्षात्कार में कैंडिटेड को अकेडेमी, सेमिनार, आलेख, पुस्तक, अनुभव और साक्षात्कार आदि के टोटल मार्क्स का प्रिंटआउट दिया गया।

परिणाम की घोषणा हुई। जिसमें हरीश को पहला स्थान मिला। नियुक्ति पत्र स्वयं मुख्यमंत्री के हाथों मिली। पोस्टिंग भी मेरिट के तहत दी गयी। हरीश को राजधानी का सबसे बेहतरीन कॉलेज मिला।